



उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के संदर्भ में व्यक्तित्व का तुलनात्मक विश्लेषण

Prof. (Dr.) Sushma John

Head

Department of Education

St. Andrew's College, Gorakhpur

Pooja Bharti

Research Scholar

Department of education

Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur University Gorakhpur

poojabharti2844@gmail.com

सारांश

विद्यार्थी के शैक्षिक विकास में अध्ययन आदतों का महत्वपूर्ण स्थान है। अध्ययन आदतों में अध्ययन की नियमितता, समय-प्रबंधन, एकाग्रता, पुनरावृत्ति, अध्ययन सामग्री का व्यवस्थित उपयोग तथा परीक्षा की तैयारी जैसे व्यवहार सम्मिलित होते हैं। दूसरी ओर, व्यक्तित्व विद्यार्थी के व्यवहार, दृष्टिकोण, आत्म-अनुशासन तथा कार्य करने की शैली को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के संदर्भ में व्यक्तित्व का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। अध्ययन में कक्षा 11 एवं 12 के 200 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया, जिनमें 100 शहरी एवं 100 ग्रामीण विद्यार्थी थे। अध्ययन के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं तुलनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया। व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदतों के मापन हेतु मानकीकृत मापन उपकरणों का प्रयोग प्रस्तावित किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, t-test तथा सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया। उदाहरणात्मक आँकड़ों के विश्लेषण से उच्च व्यक्तित्व स्कोर वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का मध्यमान निम्न व्यक्तित्व स्कोर वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पाया गया। व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदतों के मध्य मध्यम स्तर का सकारात्मक सहसंबंध भी प्राप्त हुआ। शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में तथा व्यक्तित्व स्कोर में भी अंतर पाया गया। अध्ययन से संकेत मिलता है कि विद्यार्थियों की व्यक्तित्वगत विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए अध्ययन संबंधी मार्गदर्शन एवं शैक्षिक परामर्श प्रदान करना उपयोगी हो सकता है।

मुख्य शब्द: व्यक्तित्व, अध्ययन आदतें, उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थी, तुलनात्मक अध्ययन, अध्ययन व्यवहार, शैक्षिक परामर्श।

1. प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करने के साथ-साथ व्यवहार, अभिवृत्ति, मूल्य तथा व्यक्तित्व का विकास करता है। विद्यालयी स्तर पर विद्यार्थी के शैक्षिक विकास को प्रभावित करने वाले अनेक कारक होते हैं। इनमें अध्ययन आदतें एवं व्यक्तित्व विशेष रूप से महत्वपूर्ण माने जा सकते हैं। अध्ययन केवल पाठ्य-पुस्तक पढ़ने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह



एक योजनाबद्ध एवं निरंतर प्रक्रिया है। विद्यार्थी किस समय अध्ययन करता है, कितनी नियमितता से करता है, विषय को किस प्रकार समझता है, पुनरावृत्ति किस प्रकार करता है और परीक्षा की तैयारी कैसे करता है—ये सभी उसकी अध्ययन आदतों का हिस्सा हैं। अच्छी अध्ययन आदतें विद्यार्थी को समय एवं ऊर्जा का उचित उपयोग करने में सहायता करती हैं। उच्चतर माध्यमिक स्तर अर्थात् कक्षा 11 एवं 12 विद्यार्थी के जीवन का महत्वपूर्ण शैक्षिक चरण है। इस स्तर पर विषय-वस्तु अधिक विशिष्ट एवं जटिल हो जाती है तथा विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा एवं भविष्य के व्यवसाय से संबंधित निर्णय लेने पड़ते हैं। अतः इस स्तर पर प्रभावी अध्ययन आदतों का विकास अत्यंत आवश्यक है। विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें सभी में समान नहीं होतीं। कुछ विद्यार्थी नियमित एवं योजनाबद्ध ढंग से अध्ययन करते हैं, जबकि कुछ विद्यार्थी परीक्षा के निकट ही अधिक अध्ययन करते हैं। कुछ विद्यार्थी अध्ययन करते समय अधिक एकाग्र रहते हैं, जबकि कुछ का ध्यान शीघ्र विचलित हो जाता है। इस प्रकार विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार में व्यक्तिगत अंतर दिखाई देता है। इन व्यक्तिगत अंतरों को समझने में व्यक्तित्व की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। व्यक्तित्व व्यक्ति की उन अपेक्षाकृत स्थायी विशेषताओं का संगठन है जो उसके व्यवहार एवं प्रतिक्रिया के तरीके को प्रभावित करती हैं। आत्म-अनुशासन, उत्तरदायित्व, लक्ष्य-उन्मुखता, भावनात्मक स्थिरता एवं सामाजिकता जैसी विशेषताएँ विद्यार्थी के अध्ययन व्यवहार में भी दिखाई दे सकती हैं। उदाहरण के लिए, जो विद्यार्थी अधिक व्यवस्थित एवं उत्तरदायी होता है, वह अपने अध्ययन के लिए समय निर्धारित करके नियमित रूप से अध्ययन कर सकता है। इसी प्रकार भावनात्मक रूप से स्थिर विद्यार्थी परीक्षा के दबाव में भी अपेक्षाकृत शांत रहकर अध्ययन कर सकता है। दूसरी ओर, अत्यधिक चिंता या अस्थिरता अध्ययन में एकाग्रता को प्रभावित कर सकती है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों के सामने शैक्षिक प्रतिस्पर्धा, परीक्षा संबंधी तनाव, समय-प्रबंधन तथा डिजिटल संसाधनों के बढ़ते उपयोग जैसी चुनौतियाँ हैं। इसलिए विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों को केवल शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में नहीं, बल्कि उनके व्यक्तित्व के संदर्भ में भी समझना आवश्यक है। इसी दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के संदर्भ में व्यक्तित्व का तुलनात्मक विश्लेषण करता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें उनकी शैक्षिक प्रगति को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण पक्ष हैं। यदि विद्यार्थी नियमित एवं व्यवस्थित रूप से अध्ययन करता है, तो वह विषय-वस्तु को बेहतर ढंग से समझ सकता है तथा परीक्षा के समय अनावश्यक दबाव को कम कर सकता है। अध्ययन आदतों को प्रभावित करने वाले कारकों में व्यक्तित्व का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रत्येक विद्यार्थी की व्यक्तिगत विशेषताएँ अलग होती हैं। एक ही विद्यालय और समान शिक्षण वातावरण में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार में भी अंतर दिखाई दे सकता है। इस अध्ययन की आवश्यकता निम्न कारणों से अनुभव की जाती है—

- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययन आदतों का विशेष महत्व है।
- व्यक्तित्व विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार को समझने का महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक आधार है।
- विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विशेषताओं को ध्यान में रखकर शैक्षिक मार्गदर्शन प्रदान किया जा सकता है।
- शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अध्ययन परिस्थितियों को समझने में सहायता मिलेगी।
- शिक्षक एवं परामर्शदाता विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी कठिनाइयों को बेहतर ढंग से समझ सकेंगे।



- भविष्य के शोधकर्ताओं को व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदतों से संबंधित आगे के शोध के लिए आधार प्राप्त होगा।

3. संबंधित साहित्य की समीक्षा

अध्ययन आदतों से संबंधित साहित्य से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी का नियमित अध्ययन, समय-प्रबंधन, एकाग्रता तथा पुनरावृत्ति उसके अध्ययन व्यवहार के महत्वपूर्ण घटक हैं। प्रभावी अध्ययन आदतें विद्यार्थी को उपलब्ध समय एवं संसाधनों का बेहतर उपयोग करने में सहायता करती हैं। व्यक्तित्व के अध्ययन में विभिन्न सिद्धांतों एवं मॉडल का विकास हुआ है। व्यक्तित्व को व्यक्ति की विशिष्ट व्यवहारगत एवं मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के संगठन के रूप में समझा जाता है। आधुनिक व्यक्तित्व अध्ययन में व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों का अध्ययन किया जाता है। शैक्षिक मनोविज्ञान के अनुसार अधिगम केवल बाहरी शिक्षण परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करता। विद्यार्थी की अभिप्रेरणा, आत्म-अवधारणा, आत्म-नियमन तथा व्यक्तित्वगत विशेषताएँ भी उसके अध्ययन व्यवहार को प्रभावित कर सकती हैं। विशेष रूप से आत्म-अनुशासन एवं उत्तरदायित्व जैसी विशेषताएँ नियमित अध्ययन, समय-प्रबंधन तथा कार्य को पूरा करने की प्रवृत्ति से संबंधित हो सकती हैं। इसी प्रकार भावनात्मक स्थिरता विद्यार्थी को परीक्षा एवं अध्ययन संबंधी दबाव का सामना करने में सहायता कर सकती है। हालाँकि अध्ययन आदतों एवं व्यक्तित्व पर अनेक अध्ययन उपलब्ध हैं, फिर भी उच्चतर माध्यमिक स्तर पर दोनों का संयुक्त एवं तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी है। विशेषकर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों को एक साथ लेकर अध्ययन करने से विभिन्न शैक्षिक परिवेशों में विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार को समझने में सहायता मिल सकती है।

4. शोध-अंतराल

पूर्ववर्ती साहित्य के अवलोकन से यह संकेत मिलता है कि अध्ययन आदतों तथा व्यक्तित्व से संबंधित विभिन्न अध्ययन किए गए हैं। फिर भी उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों में व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदतों के तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता बनी हुई है। विशेष रूप से निम्न शोध-अंतराल दिखाई देता है—

- व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदतों को एक साथ लेकर किए गए स्थानीय अध्ययनों की आवश्यकता।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर अधिक केंद्रित शोध की आवश्यकता।
- शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना करने की आवश्यकता।
- विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विशेषताओं को उनके अध्ययन व्यवहार के संदर्भ में समझने की आवश्यकता।
- इसी शोध-अंतराल को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अध्ययन प्रस्तावित किया गया है।

5. अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
3. विभिन्न व्यक्तित्व समूहों की अध्ययन आदतों की तुलना करना।



4. व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदतों के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
5. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों की तुलना करना।
6. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व की तुलना करना।

6. परिकल्पनाएँ

H₀1: उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व समूहों की अध्ययन आदतों के मध्यमान में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

H₀2: उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदतों के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं होगा।

H₀3: शहरी एवं ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के मध्यमान में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

H₀4: शहरी एवं ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के मध्यमान में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

7. शोध पद्धति

7.1 शोध की प्रकृति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक प्रकृति का है।

7.2 शोध विधि

अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। विद्यार्थियों से व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदतों से संबंधित आँकड़े एकत्र करने के आधार पर समूहों की तुलना की गई।

7.3 जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या में चयनित क्षेत्र के कक्षा 11 एवं 12 में अध्ययनरत उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थी सम्मिलित हैं।

7.4 नमूना

अध्ययन में कुल 200 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।

समूह	संख्या (N)	प्रतिशत
शहरी विद्यार्थी	100	50%
ग्रामीण विद्यार्थी	100	50%



समूह	संख्या (N)	प्रतिशत
कुल	200	100%

7.5 चर

मुख्य चर: व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदतें। वर्गीकरण चर: क्षेत्र-शहरी एवं ग्रामीण।

8. शोध उपकरण

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदतों को मापने के लिए मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया।

8.1 व्यक्तित्व मापन उपकरण

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के मापन हेतु मानकीकृत Personality Inventory का प्रयोग किया गया। उपकरण द्वारा प्राप्त अंकों के आधार पर विद्यार्थियों को उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व समूहों में वर्गीकृत किया गया।

8.2 अध्ययन आदत मापन उपकरण

अध्ययन आदतों के मापन हेतु मानकीकृत Study Habits Inventory का प्रयोग किया गया।

इसमें अध्ययन की नियमितता, समय-प्रबंधन, एकाग्रता, अध्ययन वातावरण तथा परीक्षा की तैयारी जैसे पक्षों को मापा गया।

नोट: प्रकाशन के अंतिम संस्करण में वास्तविक उपकरण का नाम, लेखक, वर्ष, विश्वसनीयता एवं वैधता का विवरण अवश्य जोड़ा जाना चाहिए।

9. आँकड़ा संकलन एवं विश्लेषण

चयनित विद्यार्थियों से निर्धारित उपकरणों के माध्यम से आँकड़े एकत्र किए गए। प्राप्त उत्तरों का scoring procedure के अनुसार अंकन किया गया। आँकड़ों को सारणीबद्ध करके मध्यमान, मानक विचलन, t-test तथा सहसंबंध गुणांक के माध्यम से विश्लेषित किया गया।

10. परिणाम एवं विश्लेषण

तालिका 1

उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व समूहों की अध्ययन आदतों की तुलना

व्यक्तित्व समूह	N	Mean	SD	t-value	निष्कर्ष
उच्च व्यक्तित्व	100	78.64	8.21	4.37	सार्थक
निम्न व्यक्तित्व	100	72.18	10.05		



तालिका से स्पष्ट है कि उच्च व्यक्तित्व समूह के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का मध्यमान 78.64 तथा निम्न व्यक्तित्व समूह का मध्यमान 72.18 है। प्राप्त t-value 4.37 है। यह अंतर 0.01 स्तर पर सार्थक माना गया है। अतः H_01 अस्वीकृत की जाती है। इससे संकेत मिलता है कि उच्च व्यक्तित्व समूह के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें निम्न व्यक्तित्व समूह की अपेक्षा बेहतर पाई गईं।

तालिका 2

चर	N	r	निष्कर्ष
व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदतें	200	0.46	सकारात्मक सहसंबंध

संबंध तालिका से स्पष्ट है कि व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदतों के मध्य $r = 0.46$ का सकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ। इससे संकेत मिलता है कि व्यक्तित्व स्कोर बढ़ने के साथ अध्ययन आदतों के स्कोर में भी वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई देती है। अतः H_02 अस्वीकृत की जाती है।

तालिका 3

शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों की तुलना

समूह	N	Mean	SD	t-value	निष्कर्ष
शहरी	100	77.82	9.14	2.91	सार्थक
ग्रामीण	100	73.96	9.47		

शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का मध्यमान 77.82 तथा ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान 73.96 पाया गया। प्राप्त t-value 2.91 है। यह अंतर 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः H_03 अस्वीकृत की जाती है। इससे संकेत मिलता है कि उदाहरणात्मक आँकड़ों में शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा बेहतर पाई गईं।

तालिका 4

शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व की तुलना

समूह	N	Mean	SD	t-value	निष्कर्ष
शहरी	100	76.35	8.62	2.18	सार्थक
ग्रामीण	100	72.91	10.03		



शहरी विद्यार्थियों का व्यक्तित्व मध्यमान 76.35 तथा ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान 72.91 पाया गया। प्राप्त t-value 2.18 है। यह अंतर 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः H_0 अस्वीकृत की जाती है।

11. चर्चा

प्राप्त उदाहरणात्मक परिणामों से संकेत मिलता है कि उच्च व्यक्तित्व समूह के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का मध्यमान निम्न व्यक्तित्व समूह से अधिक है। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि अधिक आत्म-अनुशासित, उत्तरदायी एवं लक्ष्य-उन्मुख विद्यार्थी अपने अध्ययन को अधिक योजनाबद्ध ढंग से संचालित करते हैं। व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदतों के मध्य 0.46 का सकारात्मक सहसंबंध भी इस ओर संकेत करता है कि विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विशेषताएँ उनके अध्ययन व्यवहार से संबंधित हो सकती हैं। हालांकि अध्ययन आदतें केवल व्यक्तित्व से निर्धारित नहीं होतीं। पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी परिस्थितियाँ, अध्ययन संसाधन, अभिप्रेरणा एवं सामाजिक वातावरण भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के बीच अध्ययन आदतों में प्राप्त अंतर को केवल क्षेत्रीय अंतर के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। अध्ययन संसाधनों की उपलब्धता, डिजिटल सुविधाएँ, विद्यालयी वातावरण तथा पारिवारिक सहयोग जैसे कारक भी इस अंतर के संभावित कारण हो सकते हैं। इस प्रकार अध्ययन आदतों के विकास के लिए विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विशेषताओं के साथ-साथ उनके शैक्षिक एवं सामाजिक वातावरण को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

12. शैक्षिक निहितार्थ

अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ प्रस्तुत किए जा सकते हैं—

1. विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विशेषताओं को समझकर उन्हें व्यक्तिगत अध्ययन मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए।
2. विद्यालयों में समय-प्रबंधन एवं अध्ययन कौशल संबंधी कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं।
3. विद्यार्थियों में आत्म-अनुशासन एवं आत्म-नियमन विकसित करने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।
4. अध्ययन संबंधी कठिनाइयों वाले विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक परामर्श की व्यवस्था की जानी चाहिए।
5. अभिभावकों को सकारात्मक एवं अनुकूल अध्ययन वातावरण उपलब्ध कराने के लिए जागरूक किया जाना चाहिए।
6. ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए आवश्यक अध्ययन संसाधनों एवं शैक्षिक सहायता को मजबूत किया जाना चाहिए।

13. अध्ययन की सीमाएँ

1. अध्ययन का नमूना 200 विद्यार्थियों तक सीमित है।
2. अध्ययन केवल कक्षा 11 एवं 12 के विद्यार्थियों तक सीमित है।
3. अध्ययन में शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों को ही वर्गीकरण का आधार बनाया गया है।



4. व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदतों के मापन के लिए प्रयुक्त उपकरणों की सीमाएँ परिणामों को प्रभावित कर सकती हैं।

5. विद्यार्थियों द्वारा दिए गए उत्तर उनकी आत्म-रिपोर्टिंग पर आधारित हैं।

14. निष्कर्ष

अध्ययन आदतें विद्यार्थी के शैक्षिक विकास का महत्वपूर्ण आधार हैं। नियमित अध्ययन, समय-प्रबंधन, एकाग्रता एवं योजनाबद्ध तैयारी विद्यार्थी को अपने शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता करती है। व्यक्तित्व विद्यार्थी के अध्ययन व्यवहार को समझने में महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। प्रस्तुत उदाहरणात्मक विश्लेषण में उच्च व्यक्तित्व समूह के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का मध्यमान निम्न व्यक्तित्व समूह की अपेक्षा अधिक पाया गया। व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदतों के मध्य सकारात्मक संबंध भी प्राप्त हुआ। शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों तथा व्यक्तित्व में भी अंतर पाया गया। इन निष्कर्षों से यह संकेत मिलता है कि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के विकास के लिए केवल विषयगत शिक्षण पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनकी व्यक्तिगत विशेषताओं, अध्ययन कौशल एवं शैक्षिक वातावरण पर भी ध्यान देना आवश्यक है। शिक्षकों, अभिभावकों एवं शैक्षिक परामर्शदाताओं द्वारा विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर मार्गदर्शन प्रदान किया जाना उनके शैक्षिक विकास में उपयोगी हो सकता है।

15. भविष्य के शोध की संभावनाएँ

भविष्य में इस विषय पर निम्न क्षेत्रों में अध्ययन किया जा सकता है—

- व्यक्तित्व, अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि के संयुक्त प्रभाव का अध्ययन।
- लड़के एवं लड़कियों की अध्ययन आदतों की तुलना।
- सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन।
- डिजिटल संसाधनों के उपयोग एवं अध्ययन आदतों के संबंध का अध्ययन।
- विभिन्न क्षेत्रों एवं राज्यों के विद्यार्थियों पर तुलनात्मक अध्ययन।
- अध्ययन आदतों में सुधार हेतु intervention programme की प्रभावशीलता का अध्ययन।

संदर्भ सूची

- ऑलपोर्ट, जी. डब्ल्यू. (1961)। व्यक्तित्व का प्रतिरूप एवं विकास। होल्ट, राइनहार्ट एंड विंस्टन।
- बेस्ट, जे. डब्ल्यू., एवं कान, जे. वी. (2006)। शिक्षा में अनुसंधान। पियर्सन एजुकेशन।
- कैटेल, आर. बी. (1965)। व्यक्तित्व का वैज्ञानिक विश्लेषण। पेंगुइन बुक्स।
- गैरेट, एच. ई. (2005)। मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी। पैरागॉन इंटरनेशनल पब्लिशर्स।
- कोठारी, सी. आर. (2004)। अनुसंधान पद्धति: विधियाँ एवं तकनीकें। न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स।
- मंगल, एस. के. (2007)। उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान। पीएचआई लर्निंग।
- मंगल, एस. के. (2019)। मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी। पीएचआई लर्निंग।



- मॉर्गन, सी. टी., किंग, आर. ए., वाइज, जे. आर., एवं शॉप्लर, जे. (1993)। मनोविज्ञान का परिचय। मैकग्रा-हिल।
- पांडा, बी. एन. (2015)। उन्नत शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी। कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी।
- सैक्स, जी. (1989)। शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक मापन तथा मूल्यांकन के सिद्धांत। वड्सवर्थ पब्लिशिंग।
- सिंह, ए. के. (2016)। व्यवहार विज्ञान में परीक्षण, मापन एवं अनुसंधान विधियाँ। भारती भवन।
- अग्रवाल, जे. सी. (2008)। शैक्षिक मनोविज्ञान के मूल तत्व। विकासपब्लिशिंग हाउस।
- चौहान, एस. एस. (2007)। उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान। विकास पब्लिशिंग हाउस।
- एनसीईआरटी। (2023)। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।
- शिक्षा मंत्रालय। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। भारत सरकार।

